श्री महावीराय नमः

जय गुरु हीरा | श्री कुशलरत्नगजेन्द्रगणिभ्यो नमः | जय गुरु मान

परस्परोपग्रहो जीवानाम्

रत्नम्

वर्ष-2, अंक-44 | 25 सितम्बर, 2020 | जोधपुर (राज.)

हिन्दी पाक्षिक | पृष्ठ-8 | मूल्य 5/- प्रति अंक

RNI No. RAJHIN/2015/66547

दुःख मुक्ति

दुःखमुक्ति की कुंजी के होते हुए भी उसको सही तरीके से घुमा नहीं पाते। यही कारण है कि संसार के लाखों, करोड़ों, अरबों मनुष्य दुःखी के दुःखी रह जाते हैं और दुःखमुक्त होना तो दूर रहा, अपने दुःख को और बढ़ा लेते हैं। अपने ही हाथ से अपना दुःख बढ़ाते हैं।

हम सब बाहरी सामग्री का अंबार पाकर भी दुःखी हैं तो इसका मतलब यह हो गया कि बाहर की साधन-सामग्री को प्राप्त करना सुख पाना नहीं, उसमें आसक्त होना आनन्द नहीं, उससे स्नेह करना शान्ति का कारण नहीं, अपितु दुःख एवं अशान्ति का ही कारण है। कदाचित् रहना पड़े तो इनके बीच में रहकर भी हम आसक्ति से, राग से, द्वेष से और स्नेह से किनारा करें, अपने जीवन को शान्ति के साधन में लगावें और शास्त्रों की आज्ञा का पालन करें। यह हमारे जीवन को आनन्द का मार्ग बताने वाला साधन है।

-'नमो पुरिसवरगंधहत्थीणं' से साभार

अध्यक्ष की कलम से

श्रीयुत् रत्नबन्धुवर / बहिन
सादर जय जिनेन्द्र !

कोरोना वैश्विक महामारी दिन-प्रतिदिन बढ़ने से हम-सब चिन्ताग्रस्त है। महामारी से ग्रसित आबाल-वृद्ध में से कई उपचारावधि में असमय-अकस्मात काल कवलित हो चुके हैं, वह वस्तुतः दुःखद है।

सबसे पहले मैं अपनी ओर से एवं अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ परिवार की ओर से कोविड-19 में दिवंगत आत्माओं की चिरशांति की प्रार्थना करता हूँ, साथ ही साथ जिनके भी पारिवारिक-परिजन महामारी से ग्रसित होकर स्वर्गस्थ हो गए है, मैं संघ की ओर से हार्दिक संवेदना व्यक्त करता हूँ।

होनी को कोई नहीं टाल सकता है, परन्तु हम स्वयं कोरोना सम्बन्धी बचाव करते हुए तथा घर-परिवार को कोरोना बचाव के विभिन्न उपायों का पालन करते हुए सभी की सुरक्षा कर सकते हैं।

अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ द्वारा एवं मेरे द्वारा समय-समय पर कई पत्रों एवं सूचनाएँ जारी कर सभी को सचेत किया गया था। यह महामारी कई देशों में अत्यन्त भयावह रूप ले चुकी है तथा हमारे देश में भी इसी ओर बढ़ रही है। इस महामारी का अभी तक कोई इलाज नहीं है और ना ही कोई निश्चित दवाई है। शारीरिक रोग प्रतिरोधक क्षमता व शारीरिक दूरी से ही इस बीमारी से बचा जा सकता है।

हमारे संत-सतीवृन्द हमारी अनमोल धरोहर है, उनकी सुरक्षा करना भी हमारा परम कर्त्तव्य है, जिसमें हम कोई समझौता नहीं कर सकते हैं। कई भावुक भक्त दर्शन-वन्दन अथवा साधना-आराधना या फिर ज्ञानाराधन-तपाराधन-धर्माराधन के लिए धर्मस्थानों पर जाना चाहते हैं, लेकिन जब तक कोरोना महामारी का अन्त न हो तब तक हम घर पर रहते हुए अन्तर्मन से नित-नियम का आराधन करें, यही विनम्र अनुरोध है। इस विशेष संकट की घड़ी में जिन-जिन सुश्रावक-सुश्राविकाओं, युवक-युवतियों ने संत-सतीवर्ग की सेवा में आदर्श प्रस्तुत किया है, वे सभी हमारे लिए प्रेरणादायी है। उन सभी का मेरी ओर से हार्दिक अभिनन्दन।

आप स्वयं अपने लिए ही नहीं अपने घर-परिवार, समाज व देश के लिए और संघ के लिए अति महत्त्वपूर्ण है, अमूल्य है। अतः संघ-समाज के सुज्ञजनों से मेरा पुनः आह्वान है कि हम जहाँ तक बन सकें, घर में ही रहें। बहुत जरूरी होने पर घर से बाहर कदम रखने के साथ मास्क लगाकर और निर्धारित व पर्याप्त दूरी बनाए रखकर तथा समय-समय पर हाथ धोने एवं स्वच्छता का पूरा-पूरा ध्यान रखें। हम-सब सरकारी नियम-उपनियमों की पालना तो करें ही, संघ-समाज की ओर से पुनः पुनः निर्देशों की भली-भांति पालना भी करें तो महामारी से बचाव संभव है। प्रत्येक श्रावक-श्राविकाएँ अपने स्वयं व स्वयं के परिवारजनों के स्वास्थ्य की रक्षा का विशेष ध्यान रखें। आप-हम-सबकी बचाव में ही सुरक्षा है।

-प्रकाश टाटिया, राष्ट्रीय अध्यक्ष
अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ

अहिंसा नगरी कोसाणा में पूज्य आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्रजी म.सा. के पावन सान्निध्य में चातुर्मासिक धर्मप्रभावना सह पर्वाधिराज पर्युषण महापर्व पर्युपासना, सांवत्सरिक क्षमापना कार्यक्रम सानन्द सम्पन्न

रत्नसंघ के अष्टम पट्टधर, आगमज्ञ, प्रवचन-प्रभाकर, सामायिक-शीलव्रत, रात्रिभोजन त्याग, व्यसनमुक्ति एवं धर्मस्थान में सामायिक-स्वाध्याय, धर्म ध्यान के प्रबल प्रेरक, जिनशासन गौरव, परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर पूज्य श्री 1008 श्री हीराचन्द्रजी म.सा., महान् अध्यवसायी, सरस व्याख्यानी श्रद्धेय श्री महेन्द्रमुनि जी म. सा.आदि ठाणा सुखसातापूर्वक कोसाणा में धर्मोद्योत धर्मप्रभावनारत विराजित है।

महापुरुषों का अतिशय महामारी का शमन करने वाला है, ऐसा पीपाड़ व कोसाणा वासियों की प्रत्यक्षानुभूति सभी जन के हृदय में श्रद्धा को अभिवर्द्धित करने वाली हैं, जब तक पूज्य गुरुदेव पीपाड़ विराजमान थे, वहाँ कोरोना केस नहीं थे। एक-दो किलोमीटर तक तथा वहाँ से विहार के बाद कोरोना संक्रमित बढ़ते गये तथा कोसाणा पदार्पण उपरान्त बाहर से यात्रा कर संक्रमित हुए युवक व परिवारजन के सही होने के उपरान्त अब 1-2 किमी. तक ग्राम सीमा में कोई कोरोना संक्रमित नहीं है, कोरोना मुक्त है। जिस प्रत्यक्ष अनुभूति पर सभी जन पूज्य आचार्यश्री एवं सन्त-भगवन्तों की मौजूदगी का प्रभाव मान रहे हैं।

तपश्चर्याएँ उत्तरोत्तर वृद्धिगत हो रही है। इस मास में वीरपुत्र श्री राजेशजी बोहरा एवं श्री महावीरजी पीतलिया ने 11-11 उपवास की, श्री हर्षितजी, श्री धीरजजी कोठारी, श्रीमती एन. रिन्कुजी बाघमार, श्री कोमलजी पोरवाल ने 9-9 उपवास की तथा सुश्री निकिताजी बोहरा, राष्ट्रीय कार्याध्यक्ष श्री बुधमलजी बोहरा, श्रीमती जयन्तिजी बाघमार, श्री मनोजजी पोरवाल ने 8-8 उपवास, पुनश्चः वीर पुत्र राजेशजी बोहरा एवं सुपुत्री सुश्री अंकिताजी बोहरा ने 6-6 उपवास की तपस्या, इनके अलावा पचौले-6, तेले-27, बेले-7 की तपस्याएँ सानन्द सम्पन्न हुई तथा उपवास, आयम्बिल, एकाशन, बियासन-7 व अन्य गुप्त तपस्याएँ चल रही हैं। श्रीमती शोभादेवीजी बाघमार, श्रीमती कमलादेवीजी बाघमार, श्रीमती विमलादेवीजी बाघमार एकान्तर तपाराधना कर रही हैं।

विशेष तपस्या क्रम में- उग्र तपस्वी श्री मोहनजी पोरवाल के 29 की तपस्या है, वे 36 की भावना से आगे बढ़ रहे हैं तथा कोसाणा संघमंत्री श्री अनोपजी बाघमार की सहधर्मिणी श्रीमती मंजुदेवीजी बाघमार के 25 की तपस्या है तथा मासक्षपण की भावना से आगे बढ़ रहे हैं।

अनेकों स्थानों से भी पूज्य गुरुदेव के श्रीचरणों में आकर तपस्वीजन प्रत्याख्यान ग्रहण कर अपने आपको धन्य मान रहे हैं। 21 अगस्त, 2020 को सुश्रावक श्री बहादुरमलजी डोसी-जोधपुर की धर्मपत्नी ने 54 की तपस्या का, बालड़ परिवार से 2 अठाई, गोटन से श्री अभयजी लोढ़ा ने अठाई, अरटिया के कर्णावट

परिवार से अठाई, पीपाड़ से वयोवृद्ध सुश्राविका श्रीमती लीलादेवीजी लोढ़ा ने अठाई तथा 20 अगस्त, 2020 को भोपालगढ़ के श्री मनोजजी बोथरा की धर्मपत्नी ने 9 की, 24 अगस्त, 2020 को श्रीमती मीनाक्षीजी कांकरिया-भोपालगढ़-जोधपुर से आकर 11 की तथा 25 अगस्त, 2020 को रणसीगांव से चोरड़िया परिवार की श्राविकाजी ने 11 की तपस्या एवं अरटियाकलां के कर्णावट परिवार से 21 एवं 24 उपवास की तपस्या के प्रत्याख्यान पूज्य गुरुदेव के पावन मुखारविन्द से किये।

चातुर्मास संयोजक श्री आर. पदमजी बाघमार (सदार), श्री आर. शांतिलालजी बाघमार (सदार) एवं श्री एम. अनोपचन्दजी बाघमार (सदार) ने शील खंध के प्रत्याख्यान पूज्य गुरुदेव से ग्रहण किये।

पर्वाधिराज पर्युषण महापर्व की पर्युपासना का सबको लाभ मिले, कोई वंचित नहीं रहे एवं सोशियल डिस्टेन्सिंग 6 फुट दूरी का भी पालन हो तथा राज्य आदेशित 50 से ज्यादा की संख्या भी एक स्थान पर एकत्रित नहीं हो इसको ध्यान में रखकर विधिवत राजाज्ञा लेकर श्री महावीर भवन, समीप स्थित स्थानक, अतिथि भवन, कोट (फोर्ट) आदि सभी जगहों को चिन्हित कर, सुव्यवस्था एवं सुरक्षा के साथ साधना-आराधना सभी कर सकें तदर्थ कोसाणा श्री संघ की व्यवस्था सम्बन्धी पुरुषार्थ एवं विवेक सराहनीय रहा। अखिल भारतीय संघ के निर्देशों की पालना में सम्पूर्ण भारत के श्रावक- श्राविकाओं ने भी विवेकपूर्वक अनुपालन करने का परिचय देते हुए यथास्थान साधना-आराधना का लक्ष्य रखते हुए विवेक का परिचय दिया।

पर्वाधिराज पर्युषण महापर्व की पर्युपासना के आठों दिन अन्तगड सूत्र वाचन श्रद्धेय श्री रवीन्द्रमुनिजीजी म.सा. ने किया एवं प्रत्येक दिवस-विशेष के आध्यात्मिक महत्त्व को समझाते हुए श्रद्धेय श्री योगेशमुनिजी म.सा. के तदन्तर महान् अध्यवसायी सरस व्याख्यानी श्रद्धेय श्री महेन्द्रमुनिजी म.सा. ने सांवत्सरिक महत्ता पर उद्‌बोधन दिया एवं आठों दिवस संवर, पौषध आदि साधना महावीर भवन में श्रावकों ने एवं बगल के स्थानक में श्राविकाओं ने की। 20 अगस्त को 30 श्रावक-श्राविकाओं ने भिक्षुदया की। 22 अगस्त को सांवत्सरिक पर्व पर भोजनशाला बंद रही एवं सभी जैन-जैनेतर श्रद्धालुओं ने उपवास आदि तपाराधना की एवं 50 पौषध आराधना हुई। 23 अगस्त को क्षमापना दिवस पर सन्त-भगवन्तों के उद्‌बोधन के तदन्तर 1. श्री एम. अनोप चन्दजी बाघमार, 2. श्री ए. गौतमचन्दजी बाघमार, 3. श्री नथमलजी बाघमार, 4. श्रीमती जी. रमोलाजी बाघमार, 5. श्रीमती एन. सन्तोषजी बाघमार, 6. साधक-श्रावक श्री यलप्पाजी, 7. श्री भंवरलालजी सारस्वत सरपंच सा, 8. राष्ट्रीय कार्याध्यक्ष श्री बुधमलजी बोहरा, 9. श्री आर. पदमचन्दजी बाघमार (संयोजक), सुश्री रेणु जी सैन तथा छोटे प्रशिक्षु बालक सम्राटजी बाघमार, लक्षजी पोकरणा, यशवीरजी बाघमार, बालिका कल्पनाजी बाघमार ने स्वआत्मभाव अभिव्यक्त कर प्रस्तुति दी।

13 अगस्त, 2020 को राष्ट्रीय अध्यक्ष सुश्रावक श्री प्रकाशचन्दजी टाटिया साहब ने वैश्विक महामारी कोरोना के फैलने के कारणों एवं जैन जीवन शैली, शाकाहार आदि पर प्रकाश डाला तथा व्याप्त विसंगतियों के पहलु उजागर करते हुए

बचाव को सावचेत किया। तदन्तर पूज्य आचार्यप्रवर की सेवा का लाभ लिया एवं आवश्यक मार्गदर्शन प्राप्त किया। सुश्रावक श्री मनमोहनजी कर्णावट साहब, श्री गोरधनजी पाराशर के साथ स्वास्थ्य की देखभाल करने आते रहते हैं। जैन-जैनेतर चिकित्सकों की सेवाएँ भी सराहनीय है। राष्ट्रीय महामंत्री श्री धनपतजी सेठिया, सुश्रावक श्री नौरतनमलजी मेहता, श्री सुभाषजी गुन्देचा, श्री अशोकजी मेहता, श्री अमरचन्दजी चौधरी आदि ने भी संघ सम्बन्धी आवश्यक मार्गदर्शन प्राप्त किया।

भगवती सूत्र वाचनी एवं पच्चीस बोल की कक्षा नियमित चल रही है। बच्चे एवं बड़े 25-30 जने प्रतिक्रमण सीख रहे है एवं प्रतिभावान बालक सम्राटजी बाघमार ने एक महीने में प्रतिक्रमण, 25 बोल शुद्ध सीखकर, पुच्छिसुणं सीख रहे हैं।

पूज्य गुरुदेव ने पर्युषण से संवत्सरी तक 9-9 सामायिक की प्रेरणा की। अधिकांशतया सभी ने आज्ञा पालन कर 9-9 सामायिक आराधना की। 2 वर्षीय सम्राट बाघमार सुपौत्र श्री आर. पदमचन्दजी बाघमार एवं 7 वर्षीय पी. यशवीर बाघमार ने 9-10 सामायिक प्रतिदिन की।-गिर्राज जैन

संचालन समिति एवं कार्यकारिणी संयुक्त बैठक

आमन्त्रण सूचना

अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ की संचालन समिति एवं कार्यकारिणी की संयुक्त बैठक दिनांक 17 अक्टूबर, 2020 को ऑनलाईन माध्यम से आयोजित की जा रही है। यह दो सत्र में आयोजित होगी, प्रथम सत्र प्रातः 10.30 बजे से 1.30 बजे तक आयोजित होगा। द्वितीय सत्र दोपहर 2.30 बजे से 5.00 बजे तक रहेगा। जिसमें सभी कार्यकारिणी सदस्य आवश्यक रूप से भाग लेकर संघ को सक्रिय-सक्षम व स्वावलम्बी बनाने में अपना सकारात्मक सहयोग एवं रचनात्मक योगदान प्रदान कर अनुगृहीत करें। 17 अक्टूबर 2020 को सभी विषय पूर्ण करने का प्रयास रहेगा, फिर भी अगर कुछ विषय शेष रहते हैं तो 18 अक्टूबर 2020 को प्रातः 10.30 बजे से बैठक पुनः आहुत की जाएगी।-प्रकाश सालेचा, संयुक्त महामंत्री

संघ की वार्षिक आमसभा का ऑनलाईन के माध्यम से आयोजन

अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ की वार्षिक साधारण सभा 01 नवम्बर, 2020 को ऑनलाईन के माध्यम से रखी गई है, जिसमें आप सभी सदस्यों की उपस्थिति सादर प्रार्थनीय है। वार्षिक साधारण सभा प्रातः 10.30 बजे से प्रारम्भ होगी। वार्षिक साधारण सभा की विचारणीय विषय सूची इस प्रकार हैं:-

1. मंगलाचरण
2. स्वागत, उद्बोधन, राष्ट्रीय अध्यक्ष महोदय द्वारा।
3. गत बैठक की कार्यवाही का पठन, अनुमोदन तथा प्रगति की जानकारी।
4. संचालन समिति / कार्यकारिणी की बैठक में लिए गये निर्णयों की जानकारी।
5. आचार्य श्री हस्ती-दीक्षा शताब्दी वर्ष में सम्पन्न कार्यक्रमों तथा आगमी

कार्यक्रमों की जानकारी।

6. संघ व संघ की संस्थाओं की कार्यकारिणियों द्वारा स्वीकृत वर्ष 2019-2020 के अंकेक्षित वास्तविक आय-व्यय एवं वर्ष 2020-2021 के प्रस्तावित बजट का अनुमोदन।
7. अंकेक्षक की नियुक्ति।
8. संघ की सहयोगी संस्थाओं के अध्यक्षगणों एवं संयोजकों द्वारा अभिव्यक्ति।
9. संघ शासन सेवा समिति संयोजक द्वारा अभिव्यक्ति।
10. संघ संरक्षक मण्डल संयोजक द्वारा अभिव्यक्ति।
11. राष्ट्रीय संघाध्यक्ष महोदय द्वारा अभिव्यक्ति।
12. अन्य विषय अध्यक्ष महोदय की आज्ञा से।
13. धन्यवाद।

नोटः—

1. **संघ के सभी सदस्यों से विशेष अनुरोध है कि आप वार्षिक आमसभा में अवश्य भाग लें और संघहित में कोई सुझाव बैठक में रखना चाहें तो अपने सुझाव लिखित में 15 अक्टूबर 2020 तक कार्यालय में भेजने की कृपा करें। संघहित के उपयोगी सुझावों पर यथोचित विचार व निर्णय करने का हमारा प्रयास रहेगा।**
2. ऑनलाईन बैठक में भाग लेने हेतु सॉफ्टवेयर सम्बन्धी जानकारी आमसभा से पूर्व समयानुसार आपको प्रेषित करने का प्रयास रहेगा।

-प्रकाश सालेचा, संयुक्त महामंत्री

श्री स्थानकवासी जैन स्वाध्याय संघ, जोधपुर द्वारा राष्ट्रीय स्तर पर चतुर्थ निबन्ध प्रतियोगिता का आयोजन

आचार्यश्री हस्ती दीक्षा शताब्दी के अवसर पर श्री स्थानकवासी जैन स्वाध्याय संघ, जोधपुर द्वारा राष्ट्रीय स्तर पर तृतीय निबन्ध प्रतियोगिता का आयोजन किया जा रहा है। निबन्ध का विषय **''आत्मशुद्धि का साधन : प्रतिक्रमण''** रखा गया है। निबन्ध निम्नांकित बिन्दुओं को आधार बनाकर लिखना है- 1. प्रतिक्रमण का अर्थ, भेद एवं महत्त्व, 2. षडावश्यकों का स्वरूप, 3. आवश्यकों का क्रम एवं प्रयोजन, 4. प्रतिक्रमण करने से लाभ, 5. प्रतिक्रमण को जीवन्त बनाने के उपाय, 6. आत्मशुद्धि के लिए प्रतिक्रमण क्यों जरूरी है। उक्त निबन्ध 1500 शब्दों (फूलस्केप साइज के 5 पृष्ठ) से अधिक नहीं होना चाहिये। इस प्रतियोगिता में सभी आयु वर्ग के श्रावक-श्राविकाएँ भाग ले सकते हैं। प्रतियोगिता में प्रथम स्थान प्राप्त करने वाले को 1500 रुपये का, द्वितीय स्थान पाने वाले को 1100 रुपये का, तृतीय स्थान पाने वाले को 700 रुपये का एवं 10 प्रतिभागियों को 200 रुपये प्रत्येक को सांत्वना पुरस्कार दिया जायेगा। सभी प्रतिभागियों को अपने बैंक खाते की जानकारी साथ में भेजना अनिवार्य है। निबन्ध भिजवाने की अंतिम दिनाँक **31 अक्टूबर, 2020** निर्धारित है। **सम्पर्क सूत्रः—** संयोजक/ सचिव, श्री स्थानकवासी जैन स्वाध्याय संघ, सामायिक-स्वाध्याय भवन, प्लॉट नं. 2, नेहरूपार्क, जोधपुर-342003 (राज.), फोनः- 0291-2624891, मोबाइलः 94131-32362, 94141-26279, 94625-43360, **ईमेलः-** swadhyaysanghjodhpur@gmail.com, **विशेषः— सभी स्वाध्यायी भाई-बहिनों को**

दिनांक 24 जनवरी, 2021 को आयोजित होने वाली आवश्यक सूत्र की खुली पुस्तक लिखित परिक्षा में भाग लेना अनिवार्य है। -सुभाष हुण्डीवाल, संयोजक

सामायिक–प्रतिक्रमण शुद्धिकरण प्रतियोगिता का आयोजन अक्टूबर माह में

आचार्यश्री हस्ती दीक्षा शताब्दी के अवसर पर अखिल भारतीय श्री जैन रत्न युवक परिषद् द्वारा सामायिक-प्रतिक्रमण शुद्धिकरण प्रतियोगिता की परीक्षा का आयोजन अक्टूबर माह के अंतिम दिनों 20 से 30 तारीख के मध्य होना तय किया गया है। परीक्षा मौखिक होगी, एक-एक पाठ को सुना जायेगा एवं उनकी शुद्धि को चैक करने के साथ अशुद्धि भी बताई जायेगी। प्रत्येक पाठ के नम्बर होंगे। नवकार तक के नम्बर है, सो पूर्ण सजग रहे।

सभी व्यवस्था सम्बन्धित क्षेत्रों की स्थिति, सरकारी एवं संघीय निर्देशों के अनुसार परिवर्तनशील है। सम्बन्धित जानकारी केन्द्रिय कार्यालय द्वारा यथासमय दे दी जायेगी। एतदर्थ सभी क्षेत्र अपने-अपने परीक्षा केन्द्रों, निरीक्षकों, पर्यवेक्षकों, अध्यापकों आदि की पूर्ण जानकारी तुरन्त श्री विवेकजी लोढ़ा-कार्याध्यक्ष तथा श्री राजीवजी नाहर-कार्यक्रम प्रभारी एवं उपाध्यक्ष को उपलब्ध करवाए। साथ ही अपने-अपने क्षेत्र के परीक्षार्थियों की जानकारी भी ले लें।

अंत में आप सभी से निवेदन है कि यथासंभव इस जानकारी को सभी तक पहुँचाये, साथ ही उनसे प्रेरणा करें की सभी अपनी पाटिया शुद्ध करे, अपूर्ण को पूर्ण करें। अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क करें:- श्री राजीव नाहर, कार्यक्रम प्रभारी एवं उपाध्यक्ष, अखिल भारतीय श्री जैन रत्न युवक परिषद्, जोधपुर, मोबाइल : 93751-65765

श्री स्थानकवासी जैन स्वाध्याय संघ, जोधपुर को प्राप्त साभार

21000/- श्री मुकेशजी जैन 'पानवाले', बजरिया-सवाईमाधोपुर, श्रीमती संतरादेवी जी धर्मसहायिका स्व. श्री महावीरप्रसादजी जैन के देवलोकगमन होने पर उनकी पावन स्मृति में।

2100/- श्री कपूरचन्दजी, कमलेशकुमारजी जैन 'बिलोपा वाले', मुम्बई, सुश्राविका श्रीमती कांतिदेवीजी धर्मसहायिका श्री कपूरचन्दजी जैन का 10 सितम्बर, 2020 को स्वर्गवास होने पर उनकी पावन स्मृति में।

2100/- श्री सौरभजी जैन, बजरिया-सवाईमाधोपुर, सुश्रावक श्री प्रेमबाबूजी जैन 'एण्डवा वाले' का स्वर्गवास होने पर उनकी पावन स्मृति में।

500/- श्री राजकुमारजी बुरड़, जोधपुर, सहयोगार्थ।

500/- श्री निखिलजी भण्डारी, जोधपुर, सहयोगार्थ।

अ. भा. श्री जैन रत्न आ. शिक्षणबोर्ड को प्राप्त साभार

2100/- श्री कपूरचन्दजी, कमलेशकुमारजी जैन 'बिलोपा वाले', मुम्बई, सुश्राविका श्रीमती कांतिदेवीजी धर्मसहायिका श्री कपूरचन्दजी जैन का 10 सितम्बर, 2020 को स्वर्गवास होने पर उनकी पावन स्मृति में।

अ.भा. श्री जैन रत्न आ. संस्कार केन्द्र को प्राप्त साभार

50000/- रतनलाल सी. बाफना फाउण्डेशन ट्रस्ट, जलगांव, सहयोगार्थ

11000/- कल्याणमल चंचलमल चोरडिया ट्रस्ट, जोधपुर, सहयोगार्थ।

10000/- श्री कानराजजी, पुष्पादेवीजी, रविजी, प्रज्ञाजी, नीतूजी मेहता, पाली, सहयोगार्थ।

11000/- श्री मोहनलालजी जैन 'करेला वाला', आवासन मण्डल, सवाईमाधोपुर, सहयोगार्थ।

5100/- श्रीमती कुमुदबालाजी सिंघवी धर्मसहायिका स्व. श्री नरेन्द्रराजजी सिंघवी, जोधपुर, सहयोगार्थ।

2100/- श्री कपूरचन्दजी, कमलेशकुमारजी जैन 'बिलोपा वाले', मुम्बई, सुश्राविका श्रीमती कांतिदेवीजी धर्मसहायिका श्री कपूरचन्दजी जैन का 10 सितम्बर, 2020 को स्वर्गवास होने पर उनकी पावन स्मृति में भेंट।

आगामी पर्व

प्र. आश्विन शुक्ला 14	बुधवार	30.09.2020	चतुर्दशी
प्र. आश्विन शुक्ला 15	गुरुवार	01.10.2020	पक्खी पर्व
द्वि. आश्विन कृष्णा 8	शनिवार	10.10.2020	अष्टमी
द्वि. आश्विन कृष्णा 30	शुक्रवार	16.10.2020	पक्खी पर्व
द्वि. आश्विन शुक्ला 7	शुक्रवार	23.10.2020	आयम्बिल ओली प्रारम्भ, स्वाति नक्षत्र (इसके पश्चात् गाज बीज होने पर सूत्र की असज्झाय रहेगी।)
द्वि. आश्विन शुक्ला 8	शनिवार	24.10.2020	अष्टमी
द्वि. आश्विन शुक्ला 10	सोमवार	26.10.2020	आचार्यप्रवर पूज्य श्री भूधरजी म.सा. का स्मृति दिवस

BOOK PACKETS CONTAINING PERIODICALS Value of Periodical From Rs.1/- to Rs.20/- For First 100 gms or part thereof Rs. 2/-

संघ सम्बन्धी
नवीनतम जानकारी
हेतु डाउनलोड करें

रत्नसंघ

GET IT ON Google Play

Download on the App Store

एप् में अपनी
प्रोफाईल
अवश्य अपडेट करें

स्वामी, प्रकाशक व मुद्रक धनपत सेठिया द्वारा अ.भा. श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ, नेहरु पार्क, जोधपुर (राज.) से प्रकाशित, सम्पादक-प्रकाश सालेचा एवं इण्डियन मैप सर्विस, सेक्टर-जी, राममन्दिर के पास, शास्त्रीनगर, जोधपुर से मुद्रित

Contact No. 0291-2636763, 94610-26279 (WhatsApp)
Website- www.ratnasangh.com, Email : absjrhssangh@gmail.com

इस अंक का सौजन्य- गुरुभक्त संघनिष्ठ श्री कनकराज जी महेन्द्र जी कुम्भट-जोधपुर, मुम्बई